Conclusion

उपसंहार

उपसंहार

मध्यकालीन गुजरात में उपलब्ध हिन्दी और गुजराती साखियों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि गुजरात के कई साखिकारों का गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओं में समान अधिकार है । अतः उन्होंने भाषा को बाधक न मानकर मुक्त रूप से साखियों की रचना दोनों भाषाओं में की है । गुजरात के ज्ञान मार्गी धारा के अन्तर्गत, अखा, धीरा, भोजे, निर्वाण साहब आदि की वाणी में नामदेव, कबीर का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । गुजरात के संतों ने प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा सत्यभूत तत्वों का प्रतिपादन ही अपनी रचनाओं में किया है । मुसलमानों के राज्यकाल में धार्मिक अशान्ति पूरे जोर पर थी । भक्ति की भावना समय के प्रवाह से मंद पड़ती जा रही थी । खंडन-मण्डन की प्रवृत्ति को छोड़कर साखिकारों ने धर्म और अध्यात्म को अधिक महत्व दिया है । इन्होंने समाज को भक्ति के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी उपदेश देने के लिए दोनों भाषाओं में रचनाएं की ।

गुजरात में हिन्दी विषय को लेकर काफी चर्चाएं हुईं । लोग साधारण रूप से हिन्दी भाषा का अध्ययन और प्रयोग कर सकें इस विषय पर अधिक ध्यान दियग गया । साधारण से साधारण कवि भी हिन्दी में रचना करना अपना कर्तव्य समझता था । लोग भगवत विषयक तथ्यों का ब्रजभाषा तथा स्वभाषा में प्रयोग करने लगे । उनकी भावाभिव्यक्ति इतनी सशक्त और प्रांजल है कि साखियों के कथ्य पर मनन करने पर भावों के द्वार स्वतः खुल जाते हैं ।

संतों के दार्शनिक विचार विषयक तथ्यों पर ध्यान केन्द्रित करने पर यह स्पष्ट हुआ कि गुजरात के साखिकारों ने ब्रह्म, जीव, जगत, माया विषयक तथ्यों का निरूपण सुष्ठु रूप से किया है । उनकी साखियों में दर्शन एक समुचित और संतुलित अनुपात में मिलता है । इनकी साखियों में दार्शनिकता, भार स्वरूप नहीं है क्योंकि दर्शन विषयक गूढ़ तत्वों का निरूपण उन्होंने इतने सरल, सहज और भाव प्रवण रूप में किया है कि अपने भावों के साथ जन समुदाय को भी बहा ले गये।

कहीं वेद उपनिषद गीता, कहीं भागवतादि पुराण, कहीं नामदेव, कबीर, कहीं नानक आदि को साथ रखकर अनेक रचनाएं की है । ब्रह्माभिव्यक्ति के साथ आत्माभिव्यक्ति विषयक साखियाँ लिखकर उन्होंने अपना तादात्म्य स्थापित करना ही अपना ध्येय समझा ।

अखा, प्रीतम, अनिसा, भाभाराम, लोचनस्वामी आदि कवियों ने अपने ~~प्र~~ गुरू विषयक तथ्यों को अभिव्यक्त करने के लिए उत्कृष्ठ साखियाँ रची । गुरू शिष्य सम्बन्ध, सत्संग आदि विषयक साखियाँ अपने उत्कृष्ठ प्रतिकों, अलंकारों और बिम्बों के कारण सहजग्राह्य हो गयी हैं । गुजराती साखिकारों की भक्ति इतनी प्रबल है कि उन्होंने ईश्वर के विषय में कहा है -

जाणवु हतुं ते जाणियु, हवे नथी जाणवुं कांय
पोते पोतामा भज्यो, ज्यम पालो पाणी मांय ।
- प्रीतम वाणी (पृ० 13)

नाथों, सिद्धों एवं संतों द्वारा साखी लिखने की जो परम्परा आरम्भ हुई उसे गुजरात के राम-कबीर सम्प्रदाय के प्रमुख संत भक्त कवि ज्ञानीजी तथा उनकी शिष्य परम्परा ने प्रचारित किया । इसका अनुसरण उनके परवर्ती संत भक्तों द्वारा हुआ । इस काव्य प्रकार का प्रयोग न केवल ज्ञान मार्गी परम्परा के अखा, जीवणदास, निर्वाण साहब, संतराम आदि संतों द्वारा हुआ बल्कि दयाराम, राजे, गबरीबाई जैसे महान सगुण भक्तों ने भी साखियों में अपने आराध्य देव की प्रशस्ति की है । ब्रह्म को आलम्बन बनाकर व्यक्त की गयी ऐसी अनुभूतियाँ भक्ति, ज्ञान और एकनिष्ठता का संमिश्रण है । इनकी सबसे बड़ी विशेषता उनकी अनुभव-जन्यता है । साखीकार सच्चे सत्यान्वेषक थे । अतः उनकी रचनाओं में उनके अनुभूत तथ्य ही हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओं में अभिव्यक्त हुए हैं । दर्शन और अध्यात्म जैसे शुष्क विषय में जप, तप, नियम आदि कठोर श्रृंखलाओं के बीच

साखिकारों ने माया, जगत और समाज विषयक साखियाँ लिखकर एक अनुपम रचना तैयार की ।

इन रचनाकारों ने साखी जैसे लघु काव्य रूप में रहस्यवाद जैसे गूढ़ तत्वों को भी समाहित किया है । पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिकाओं को आधार बनाकर आत्मा परमात्मा विषयक गूढ़ एवं मधुर भावों को स्पष्ट किया । गुजरात के भक्तों का प्रेम, पराकाष्ठा पर पहुँचता है जब उन्हें विरह होता है । विरह में भक्त की आँखों में लहु ता है - "बिन देखे मेहबुब लोहु टबके नैन" ‡पृ0 303‡

राजे जैसे भक्त कवि, भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँच कर खुद को "ब्रज के रजकणों"से भी तुच्छ समझते हैं । भक्ति की तीव्रता इनकी साखियों में परिलक्षित होती है । एक इस्लाम धर्मावलम्बी कवि की कृष्णभक्ति इनकी साखियों से झलकती है । इसी प्रकार भाभाराम, निर्वाण साहब आदि भक्त कवि पिराना परम्परा से सम्बन्धित होते हुए भी राम-कृष्ण के भेद न मानकर दोनों को अपनी साखियों में समान स्थान दिया है । यहाँ तब कि "राम कहो या कृष्ण" कहकर दोनों के नामस्मरण को समान महत्व दिया है ।

संतों द्वारा रचित माया विषयक साखियाँ अहंभाव का नाश करके मानव को अनेक प्रपंचों से बचने की सत् शिक्षा देती है । माया का स्वरूप, उसके जाल में पड़ने वालों की गति, उनसे निजात विषयक तथ्यों का स्पष्ट निरूपण उनकी साखियों का मूल उद्देश्य है । इतनी कुशलता से माया का वर्णन साखियों में किया है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी माया के जाल से खुद को बचाने की चिंता करेगा । अत: मोक्ष विषयक साखियाँ भी प्रस्तुत है । इस प्रकार से जाल और जाल से बचने के साधन को भी साखिकारों ने जुटाया है ।

नारी के "नारायणी" रूप को साखिकारों ने सामाजिकता विषयक साखियों में दर्शाया है । असत् नारी का समाज में असम्मान होता है और सीता जैसी पतिव्रता नारी की पूजा की जाती है । मुसलमान शासकों द्वारा पीड़ित जनता को सतपथ पर लाने के लिए धर्म समन्वय विषयक साखियाँ लिखकर समाज को सच्चा राह दिखाना भी इन साखिकारों का मूल उद्देश्य रहा । आवश्यकता पड़ने

पर कहीं कहीं उन्होंने अपने शासक का गुणगान, कहीं उनके द्वारा किए गए महत् कार्य की बखान करके एक न्याय प्रेमी का परिचय दिया है । अगर सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो ये संत विभिन्न सम्प्रदायों और धर्मों से संबंधित थे । परन्तु इनकी साखियाँ धर्म समन्वयता का पाठ पढ़ाती हैं । इनकी साखियों में द्वैत के साथ अद्वैत, ज्ञान के साथ भक्ति, ध्यान के साथ धर्म और सत्-चित् आनन्द के वास्तविक स्वरूप का परिचय मिलता है जिसे उन्होंने स्वभाषा तथा अर्जित (हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि) दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया है । इन साखिकारों ने साखियों के माध्यम से संपूर्ण विश्व के कल्याण और ज्ञानोदय का मार्ग खोल दिया । इनकी उक्ति "समजे से सुख उपजे, आन उपजे नांह" ही इनके मनोभावों को स्पष्ट करते हैं ।

गुजरात के साखिकारों के शैली वैविध्य भी प्रशंसनीय है क्योंकि विविध शैलियों में अनुभूतियों को ढालकर उसे संप्रेषणिय बनाना भी यथेष्ठ कुशलता का परिचय देता है । प्रतीकात्मक शैली के अन्तर्गत इतने सहज और सरल प्रतिकों का चयन किया है कि अनपढ़, गंवार जनता भी प्रतीक के माध्यम से आत्मा और परमात्मा विषयक कथ्यों को समझ सके । संकेतात्मक शैली के साखिकारों ने प्रश्नात्मक शैली में ब्रह्म विषयक जिज्ञासा को उठाया है और तत्पश्चात् अन्य साखी में संकेतात्मक शैली के द्वारा अपने उठाये प्रश्न का समाधान भी प्रस्तुत किया है । सर्पगतिवत् शैली के द्वारा विषय का सहजीकरण तथा रोचक और गेय दोनों कलाओं में माहिर होने का परिचय दिया है । वर्णों के सुन्दर विनियोग द्वारा साखियों के सहज स्मरण होने की विधा का भी पालन किया है ।

एक गेय काव्य होने के कारण साखियों में विभिन्न राग रागिणियों का भी प्रयोग साखिकारों ने किया है । भक्ति भाव पूर्ण साखियों में मूलतः शान्तरस का ही प्रयोग होता है । कहीं कहीं साखी के अर्थ को समझकर साखी का गायन उसी राग में किया गया है । जैसे ईशवन्दना के लिए राग प्रभात की साखी, प्रहरों को सूचित करने के लिए राग कल्याण की साखी आदि गाने की विधा का भी ज्ञान साखिकारों को था । इनका सुष्ठ परिचय इनकी साखियों में परिलक्षित

होता है । अत: साखी जैसे लघु और अध्यात्म विषयक शुष्क तत्वों से पूर्ण काव्य को सरस और सरल बनाने में गुजरात के साखिकार सिद्ध हस्त थे ।

समाज के प्रत्येक वर्ग की प्रजा की समझ में आने के लिए उन्होंने साखियों में ठेठ गुजराती शब्दों का प्रयोग, परिमार्जित शिक्षित वर्गों में साखियों को लोकप्रिय बनाने के लिए परिमार्जित साखी तथा साधारण और मिश्रित साखियों की रचना भी की है ।

ज्ञान भक्ति, भाषा-साहित्य तथा समन्वयता की दृष्टि से मध्यकालीन गुजरात में उपलब्ध हिन्दी और गुजराती साखियाँ निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ हैं । गुजराती और हिन्दी साखियों के माध्यम से व्यक्त पारलौकिक ज्ञान, आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति ही उनका प्रधान ध्येय था । एक भाषा विषयक मतभेद जो मध्यकाल के अशान्त वातावरण की उपज थी उसे साखिकारों ने अपनी साखियों के माध्यम से शान्त करने का सन्निष्ठ ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है । निष्कर्षत: गुजरात का साखी-साहित्य एक ऐसा वैविध्य सम्पन्न विषय है जिसकी छान बीन करने पर राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा महाराष्ट्र के अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदानों का भी पता लगता है । गुजरात के साखिकारों का यह प्रदान अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य के इतिहास में उच्च स्थान पर आसनस्थ होने के लिए सर्वथा समुद्रवत् है ।

प्रमुख सहायक ग्रन्थ-सूची

हिन्दी ग्रन्थ

1	अक्षर-रस	सं0 डा0 कुंवरचन्द्र प्रकाशसिंह म. स. वि. वि. बड़ौदा 1963
2	अलंकारों का स्वरूप विकास	डा0 ओमप्रकाश नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली 1950
3	उर्दू हिन्दी शब्द कोश	सं0 मुस्तफा खां मु0 भार्गव भूषण प्रेस-वाराणसी 1959
4	उत्तरी भारत की संत-परम्परा	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्र0 भारती भंडार, प्रयाग, द्वि0सं0
5	उदाधर्म पंचरत्नमाला	प्र0 राम कबीर सम्प्रदाय के स्वामी जगदीशचन्द्र महाराज, पुनीपाद, बड़ौदा
6	कबीर कोश	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1985
7	कबीर के काव्य रूप	डॉ0 नजीर मुहम्मद अलीगढ़, प्रथम संस्करण 1971
8	कच्छी संतों की हिन्दी वाणी	सं0 कमल महेता चिन्ता प्रकाशन, पिलानी, 1988

॥9॥	कबीर मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन	सं० डॉ० कामेश्वर प्रसाद सिंह प्र० विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी 1992
॥10॥	खड़ी बोली का सामाजिक आन्दोलन	शितिकंठ मिश्र, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1957
॥11॥	गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी	सं० अम्बाशंकर नागर, डॉ० रमणलाल पाठक प्र० गुर्जर भारती, अहमदाबाद 1969
॥12॥	गुजराती और ब्रजभाषा - कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० जगदीश गुप्त प्र० हिन्दी परिषद, प्रयाग
॥13॥	गुजरात में कबीर परम्परा	डॉ० कान्तिकुमार भट्ट
॥14॥	गुजरात के संतों की हिन्दी साहित्य को देन	डॉ० रामकुमार गुप्ता, प्र० जवाहर पुस्तकालय, मथुरा-1968
॥15॥	गुजरात के कवियों की हिन्दी साहित्य को देन	डॉ० नटवरलाल व्यास, आगरा, 1967
॥16॥	गुजरात के लोक संस्कृति की झलक	डॉ० सुभाषिनी कपुर, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
॥17॥	दयाराम और उनकी हिन्दी कविता	डॉ० महावीरसिंह चौहान प्र० संस्कृति प्रकाशन, अहमदाबाद 1988
॥18॥	ध्यान सम्प्रदाय	डॉ० भरतसिंह उपाध्याय प्र० नेशनल पब्लिसिंग हाउस प्रथम संस्करण - 1909
॥19॥	भारतीय दर्शन	पंडित बलदेव उपाध्याय, प्र० शारदा मंदिर, वाराणसी पंचम परिवृंहित संस्करण - 1957

‡20‡	मात्रिक छन्दों का विकास	डॉ0 शिवनन्दन प्रसाद राष्ट्रभाषा परिषद, पटना-1964
‡21‡	राजस्थान और गुजरात के मध्यकालीन संत भक्त कवि	डॉ0 मदन कुमार जानी, प्र0 जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
‡22‡	रीतिकालीन काव्य का शास्त्रीय अध्ययन	डॉ0 पवन कुमार जैन, उत्तर प्रदेश
‡23‡	वैष्णव कबीर	हरिहर प्रसाद गुप्त भाषा साहित्य संस्थान इलाहाबाद - 1986
‡24‡	वेद मंजरी	डॉ0 रामनाथ वेदालंकार प्र0 सम्पूर्ण शोध संस्थान, नईदिल्ली - 1983
‡25‡	रास और रासान्वयी काव्य	डॉ0 दशरथओमना नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
‡26‡	संत काव्य	डॉ0 परशुराम चतुर्वेदी प्र0 किताब महल, इलाहाबाद
‡27‡	संत सुधा सार	वियोगी हरि, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, दिल्ली - 1953
‡28‡	सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य	प्रोफे0 शिवप्रसाद सिंह काशी हिन्दु विश्वविधालय, तृतीय संस्करण - वाराणसी द्वि0सं0
‡29‡	हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्य धारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठ भूमि	डॉ0 गोविन्द त्रिगुणायत साहित्य निकेतन, प्रथम संस्करण - 1961, कानपुर

|30| हिन्दी साहित्य कोश — डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा
प्र0 ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी
तृतीय संस्करण - 1985

|31| हिन्दी साहित्य की भूमिका — आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
प्र0 हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
बम्बई

|32| हिन्दी साहित्य का आदिकाल — आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
प्र0 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद,
पटना

गुजराती ग्रन्थ

|1| अखो अने मध्यकालीन ज्ञानमार्गी परम्परा — डॉ0 योगेन्द्र त्रिपाठी
प्र0 प्राच्य विद्या मंदिर,
म0स0वि0वि0 - वडोदरा

|2| अनवर काव्य — सं0 महासुखभाई चुनीलाल
तृतीय आवृत्ति

|3| अध्यात्म भजन माला |भाग-1 तथा 2| — सं0 कहानजी धर्मसिंह
ई0सं0 1903

|4| अर्जुन वाणी — सं0 महादेव देसाई,
अहमदाबाद-1922

|5| अखो एक स्वाध्याय — डॉ0 रमणलाल पाठक
प्र0 सागर प्रकाशन ट्रस्ट, बड़ौदा 1976

(6) कच्छ ना संतो अने कवियो (भाग-2)	ले0 दुलेराम एल काराणी सोनगढ़, सौराष्ट्र
(7) कवि गिरधर जीवन अनेक कवन	डॉ0 जोशी देवदत्त, 1982 प्र0 प्राच्य विधा मंदिर, म0स0वि0वि0 वडोदरा
(8) कवि चरित (भाग-2)	के0का0 शास्त्री गुजरात विधान सभा, अहमदाबाद 1952
(9) गुजरातना भक्तो	ले0 माणेक लाल शंकरलाल राणा सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद
(10) गुजरातीओ ए हिन्दी साहित्य मां आपेलो फाड़ो	श्रीयुत डाह्याभाई देरासरी प्र0 गु0 वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद 1937
(11) गबरी कीर्तनमाला	शोधक "मस्त" प्र0 कमलाशंकर भचेच-अहमदाबाद
(12) मध्यकालीन गुजराती साहित्यना पद्य स्वरूपो	डॉ0 मंजुलाल मजमुदार आचार्य बुक डिपो - बड़ौदा
(13) गुजराती कहेवत संग्रह अने प्राचीन दोहाओ अने साखियो	आशाराम दलीचन्द्र शाह, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद-1955
(14) छोटयनी वाणी	सं0 भिक्षु अखंडानंद प्र0 सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अहमदाबाद-1926

।15। दयाराम रसथाल — प्र0 भक्त कवि श्री दयाराम स्मारक समिति, डभोई

।16। नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह — सं0 ईच्छाराम सूर्यराम देसाई, प्र0 गुजराती प्रेस, बम्बई-1913

।17। नटवर भजनावली — सं0 राजसिंह चौहान राजकोट

।18। निरांत काव्य — सं0 श्री गोपालदास वडोदरा 1959

।19। परिचित पद संग्रह — प्र0 सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद - द्वितीय आवृत्ति 1946

।20। परमानंद प्रकाश पदमाला — प्र0 जेठालाल पटेल तृतीय संस्करण - बम्बई, 1974

।21। प्रीतमदास नी वाणी — सं0 भिक्षु अखंडानंद प्र0 सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय अहमदाबाद

।22। प्रीतम एक अध्ययन — डॉ0 अश्विनभाई पटेल अहमदाबाद, 1979

।23। प्राचीन काव्यकाला ।भाग-10। — निरांत कृत कविता

।24। प्राचीन गुजराती छन्दो — श्रीरामनारायण पाठक गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद

।25। बृहद् पिंगल — श्रीरामनारायण पाठक गुजरात साहित्य परिषद, बम्बई 1899

।26। बंसी बोल ना कवि अने दयारामभाई नुं जीवन दर्पण — ले० प्रो० जेठालाल गोवर्धनदास शाह, डभोई

।27। बृहद् काव्य दोहन।भाग। थी 8 तक। — सं० इच्छाराम सूर्यराम देसाई, गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई

।28। भजन सागर ।भाग । अने 2। — प्र० सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद-1958

।29। भजन सार सिंधु — सं० माडणजी रामजी पटेल, अंजार ।कच्छ। द्वितीय आवृत्ति 1927

।30। भागवद्‌गोमंडल — भगवतसिंह जी, राजकोट - 1954

।31। भक्त कवि राजे कृत काव्य संग्रह — सं० डॉ० रमेश जानी, प्र० फार्वस गुजराती सभा, बम्बई 1991, प्रथम संस्करण

।32। मध्यकाल ना साहित्य प्रकारो — ले० डॉ० चन्द्रकान्त महेता

।33। मध्यकालीन गुजराती साहित्य — अनन्तराम रावल

।34। राम कबीर सम्प्रदाय — डॉ० कान्ति कुमार भट्ट, प्र० राम कबीर भक्त समाज, केलिफोर्निया

।35। रवी भाण सम्प्रदाय नी वाणी ।भाग-बिजो। — प्र० एल एम मोती, पूना 1936

।36। वस्ता ना पदो — सं० सुरेश जोशी, गुजराती विभाग - म०स०वि०वि०, बड़ौदा 1983

(137)	संत निर्वाण साहब	माणेकलाल राणा प्र0 खुशालदास चुनीलाल राणा सूरत 1972
(138)	संत तेजानंद स्वामी	माणेकलाल राणा प्र0 महंत श्री रामसेवकदास जी, सूरत 1969
(139)	संत भाभाराम	माणेकलाल राणा प्र0 आचार्य काकाश्री गिरधरदास द्वारकादास, नड़ियाद 1976
(140)	संत निर्मलदास	माणेकलाल राणा प्र0 खुशालदास चुनीलाल राणा सूरत 1976
(141)	संत नाथाजी काका	डॉ0 माणेकलाल राणा सूरत
(142)	साहित्यकार अखो	सं0 डॉ0 मंजुलाल मजमुदार प्र0 प्रेमानंद साहित्य सभा, प्रथम संस्करण, बड़ौदा 1974